दैनिक समसामयिकी विश्लेषण

समय: 45 मिनट

दिनाँक: 18-04-2025

विषय सूची

विश्व धरोहर दिवस 2025

प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल को दृश्यमान, सुलभ और सस्ता बनाना

वाहन-से-ग्रिड (V2G) प्रौद्योगिकी

चीन के साथ भारत का व्यापार घाटा बढ़ा

भारत की वैश्विक फार्मास्युटिकल उपस्थिति

मध्यम द्रव्यमान ब्लैक होल (IMBH)

संक्षिप्त समाचार

गुरु तेग बहादुर

भगवद् गीता और नाट्यशास्त्र को यूनेस्को के विश्व स्मृति रजिस्टर में शामिल किया गया

K2-18b की खोज, बाह्यग्रह पर बायोसिग्नेचर

भारत और इंटरनेशनल बिग कैट अलायंस ने समझौते पर हस्ताक्षर किए

मिशन अमृत सरोवर

सिल्कयारा सुरंग

टॉरस मिसाइल

दाऊदी बोहरा समुदाय

विश्व धरोहर दिवस 2025

संदर्भ

- विश्व धरोहर दिवस, जिसे अंतर्राष्ट्रीय स्मारक एवं स्थल दिवस के रूप में भी जाना जाता है, प्रत्येक वर्ष 18 अप्रैल को मनाया जाता है।
    - इस वर्ष का विषय है "आपदाओं और संघर्षों से खतरे में पड़ी विरासत: ICOMOS की 60 वर्षों की कार्रवाइयों से तैयारी और सीख।"

पृष्ठभूमि

- 1982 में, अंतर्राष्ट्रीय स्मारक एवं स्थल परिषद् (ICOMOS) ने प्रस्ताव दिया कि 18 अप्रैल को विश्व धरोहर दिवस के रूप में मनाया जाना चाहिए।
- बाद में, 1983 में संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन (यूनेस्को) के 22वें आम सम्मेलन में इस तिथि को मंजूरी दी गई।

विश्व धरोहर स्थल

- विश्व धरोहर पृथ्वी पर उन स्थानों को नामित किया जाता है जो मानवता के लिए उत्कृष्ट सार्वभौमिक मूल्य रखते हैं और इसलिए उन्हें भविष्य की पीढ़ियों के सराहने और आनंद लेने के लिए संरक्षित करने हेतु विश्व धरोहर सूची में अंकित किया गया है।
    - ये सांस्कृतिक, प्राकृतिक या दोनों का मिश्रण हो सकते हैं।
    - इन्हें यूनेस्को के नेतृत्व में एक अंतर्राष्ट्रीय समझौते के तहत संरक्षित किया गया है।
- विश्व धरोहर सम्मेलन, 1972 को यूनेस्को के सदस्य देशों द्वारा अपनाया गया था।
    - यह अभिसमय संभावित स्थलों की पहचान करने तथा उन्हें संरक्षित एवं सुरक्षित रखने में राज्य पक्षों की भूमिका के कर्तव्यों को निर्धारित करता है।
    - भारत 1977 में इस कन्वेंशन का हिस्सा बना।

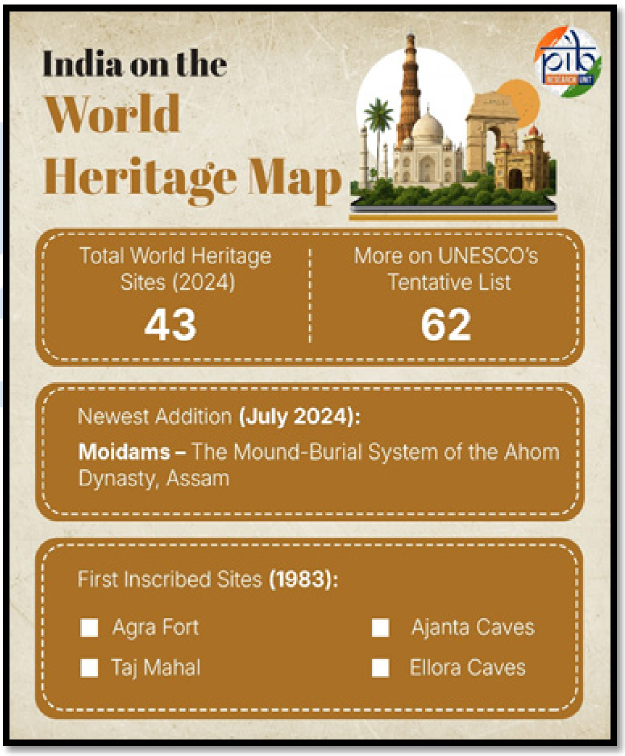

भारत के राष्ट्रीय महत्त्व के स्मारक (MNI)

- प्राचीन स्मारकों और पुरातत्व स्थलों तथा अवशेष अधिनियम, 2010 (AMASR अधिनियम, 2010) के अनुसार इन प्राचीन स्मारकों का आधिकारिक रूप से संरक्षण भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा किया जाता है।
- देश में 3697 प्राचीन स्मारक और पुरातात्विक स्थल एवं अवशेष राष्ट्रीय महत्त्व के घोषित हैं।

भारत की सांस्कृतिक विरासत को बढ़ावा देने के लिए सरकार की पहल

- **पुरावशेषों की पुनर्प्राप्ति:** भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण सांस्कृतिक संपत्ति के संरक्षण के लिए प्रतिबद्ध है।
  - सरकार ने वर्ष 1976 से 2024 तक विदेशों से 655 पुरावशेष वापस मंगाए हैं।
- **'विरासत अपनाओ' योजना:** यह कार्यक्रम 2017 में शुरू किया गया था और 2023 में इसे "विरासत अपनाओ 2.0" के रूप में नया रूप दिया गया।
  - यह निजी और सार्वजनिक समूहों को अपने कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व निधियों का उपयोग करके संरक्षित स्मारकों पर सुविधाएँ विकसित करने में सहायता करने की अनुमति देता है।
- **विश्व धरोहर समिति का 46वाँ सत्र:** भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, 2024 में विश्व धरोहर समिति के 46वें सत्र की मेजबानी करेगा।
- **अवश्य देखें पोर्टल:** भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण ने "भारत के अवश्य देखें स्मारकों और पुरातत्व स्थलों" को प्रदर्शित करने के लिए एक पोर्टल बनाया है।
- **भारत में सांस्कृतिक विरासत का डिजिटलीकरण:** 2007 में स्थापित राष्ट्रीय स्मारक और पुरावशेष मिशन भारत की विरासत और पुरावशेषों का डिजिटलीकरण और दस्तावेजीकरण करने का कार्य करता है।

निष्कर्ष

- विश्व धरोहर दिवस हमें स्मरण दिलाता है कि अपनी विरासत की रक्षा करना एक साझा जिम्मेदारी है।
- प्राचीन स्मारकों से लेकर कालातीत साहित्य तक, भारत मजबूत राष्ट्रीय प्रयासों और वैश्विक सहयोग के माध्यम से अपनी सांस्कृतिक और प्राकृतिक विरासत को संरक्षित करना जारी रखे हुए है।
- ये प्रयास सुनिश्चित करते हैं कि हमारी समृद्ध विरासत आने वाली पीढ़ियों को प्रेरित, शिक्षित और एकजुट करेगी।

Source: PIB

प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल को दृश्यमान, सुलभ और सस्ता बनाना

प्रसंग

- भारत में, सरकार पहुँच, वहनीयता और दृश्यता जैसी चुनौतियों को संबोधित करते हुए अभिनव नीतियों एवं कार्यक्रमों के माध्यम से प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल को बदलने के लिए काम कर रही है।

भारत में प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल के बारे में

- **WHO के अनुसार:** प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल (PHC) पूरे समाज का एक दृष्टिकोण है, जो राष्ट्रीय स्वास्थ्य प्रणालियों को प्रभावी ढंग से संगठित और मजबूत करने के लिए है, ताकि स्वास्थ्य और कल्याण सेवाओं को समुदायों के करीब लाया जा सके।
- इसका उद्देश्य सभी नागरिकों को सुलभ, सस्ती और व्यापक सेवाएँ प्रदान करना है।
- यह प्रचारात्मक, निवारक, उपचारात्मक, पुनर्वास और उपशामक देखभाल पर केंद्रित है, जो आवश्यक स्वास्थ्य सेवाओं तक समान पहुँच सुनिश्चित करती है।
- **अल्मा-अटा घोषणा 1978:** इसने PHC को वैज्ञानिक रूप से मजबूत और सामाजिक रूप से स्वीकार्य तरीकों पर आधारित आवश्यक स्वास्थ्य देखभाल के रूप में पहचाना।

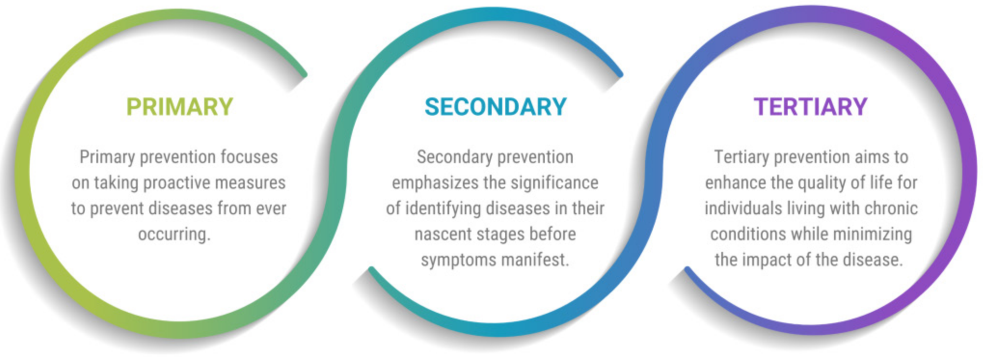

प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल में प्रमुख चिंताएँ

- **शहरी बनाम ग्रामीण विभाजन:**
  - शहरी झुग्गी बस्तियाँ, भले ही तृतीयक देखभाल केंद्रों के निकट हों, फिर भी वहनीयता और भीड़भाड़ की समस्याओं का सामना करती हैं।
  - ग्रामीण क्षेत्रों में 65% से अधिक आबादी रहती है, लेकिन वहाँ प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र (PHCs) और प्रशिक्षित चिकित्सा कर्मियों की कमी है, साथ ही परिवहन कनेक्टिविटी भी खराब है।
- **मानव संसाधन की कमी (2023–24):**
  - सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों (CHCs) में 77% सर्जन, 69% प्रसूति विशेषज्ञ और 70% चिकित्सकों की कमी।
  - कई राज्यों में 10–25% स्टाफ नर्स की रिक्तियाँ।
- **गैर-संचारी रोगों और मानसिक स्वास्थ्य का बोझ:**
  - प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र अब जीवनशैली संबंधी बीमारियों और मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं को प्रबंधित करने की अपेक्षा करते हैं।
  - हालाँकि, सीमित स्टाफ प्रशिक्षण और बुनियादी ढाँचा प्रभावी प्रतिक्रिया में बाधा बनते हैं।

प्रमुख सरकारी पहल

- **राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन:**
  - भारत में सब-सेंटर (SCs), प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र (PHCs), और सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र (CHCs) का एक विशाल नेटवर्क है।
  - ये सुविधाएँ स्वास्थ्य सेवाओं की खोज करने वाले व्यक्तियों के लिए पहले संपर्क का बिंदु होती हैं।
  - राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के अनुसार, पूरे देश में 1.6 लाख सब-सेंटर, 26,636 PHCs, और 6,155 CHCs हैं।
- **आयुष्मान भारत कार्यक्रम (2018):**
  - इसका उद्देश्य स्वास्थ्य और कल्याण केंद्रों (HWCs) के माध्यम से प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल को बदलना है।
  - HWCs गैर-संचारी रोग, मातृ और शिशु स्वास्थ्य, मानसिक स्वास्थ्य और वृद्ध देखभाल से संबंधित सेवाएँ प्रदान करते हैं।
- **समग्र प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल (CPHC):**
  - राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति 2017 ने CPHC के माध्यम से सार्वभौमिक स्वास्थ्य कवरेज पर बल दिया।
  - यह आयुर्वेद, योग, यूनानी, सिद्ध, और होम्योपैथी (AYUSH) जैसे पारंपरिक चिकित्सा प्रणालियों को आधुनिक स्वास्थ्य देखभाल के साथ एकीकृत करता है।
- **कम सेवित क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित:**
  - आकांक्षी जिला कार्यक्रम (ADP) और आकांक्षी ब्लॉक कार्यक्रम (ABP) जैसी पहल का उद्देश्य अविकसित क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवा में सुधार करना है।
- **प्रधानमंत्री आयुष्मान भारत स्वास्थ्य अवसंरचना मिशन (PM-ABHIM):**
  - इसका ध्यान भारत की स्वास्थ्य प्रणाली को आवश्यक बुनियादी ढाँचे से सुसज्जित करने पर है, जिसकी लागत ₹64,180 करोड़ है।
- **महिलाओं के नेतृत्व वाली पहल:**
  - **स्वयं सहायता समूहों (SHGs) की भूमिका:** 1.9 करोड़ से अधिक महिलाओं को SHGs के माध्यम से सशक्त बनाया गया है, जो प्राथमिक स्वास्थ्य सेवाओं पर जागरूकता को बढ़ावा देते हैं।

वैश्विक पहल

- **सार्वभौमिक स्वास्थ्य कवरेज (UHC):**
  - इसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि सभी व्यक्तियों को बिना वित्तीय कठिनाई के गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँच मिले।
  - निम्न और मध्यम आय वाले देशों में प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल हस्तक्षेपों को बढ़ाने से 2030 तक 60 मिलियन जीवन बचाए जा सकते हैं और औसत जीवन प्रत्याशा में 3.7 वर्ष की वृद्धि हो सकती है।

- **वैश्विक स्वास्थ्य कार्यक्रम:**
    - **एड्स, तपेदिक और मलेरिया से लड़ने के लिए वैश्विक कोष (Global Fund):** रोग-विशिष्ट हस्तक्षेपों के साथ प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल को एकीकृत करने पर ध्यान केंद्रित करता है।
    - **गावी एलायंस:** टीकाकरण प्रयासों का समर्थन करता है, विकासशील देशों में प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल प्रणालियों को मजबूत करता है।

आगे का रास्ता

- **बुनियादी ढाँचे को मजबूत करना:**
    - HWCs के नेटवर्क का विस्तार करना और कम सेवित क्षेत्रों में उनकी कार्यक्षमता सुनिश्चित करना महत्त्वपूर्ण है।
    - टेलीमेडिसिन में निवेश शहरी और ग्रामीण स्वास्थ्य देखभाल पहुँच के बीच के अंतर को समाप्त कर सकता है।
- **जागरूकता बढ़ाना:**
    - सामुदायिक पहुँच कार्यक्रम और स्वास्थ्य शिक्षा अभियान स्वास्थ्य सेवाओं की दृश्यता और उपयोगिता में सुधार कर सकते हैं।
- **वहनीयता सुनिश्चित करना:**
    - जेब से होने वाले खर्चों को कम करने और PM-JAY जैसी योजनाओं के माध्यम से वित्तीय सुरक्षा प्रदान करने के लिए निरंतर प्रयास आवश्यक हैं।

Source: TH

वाहन-से-ग्रिड (V2G) प्रौद्योगिकी

समाचार में

- केरल राज्य विद्युत बोर्ड (KSEB) और IIT बॉम्बे ने राज्य भर में V2G प्रौद्योगिकी के कार्यान्वयन की खोज के लिए एक पायलट परियोजना शुरू की है। हालांकि, भारत में V2G अभी भी प्रारंभिक चरण में है।

वाहन-से-ग्रिड (V2G) प्रौद्योगिकी

- **V2G प्रौद्योगिकी:** यह इलेक्ट्रिक ग्रिड के बुनियादी ढाँचे की स्थिरता और लचीलापन बढ़ाने के उद्देश्य से एक परिवर्तनकारी समाधान है।
- यह इलेक्ट्रिक वाहनों (EVs) को उपयोग न होने पर बिजली ग्रिड में वापस शक्ति भेजने की अनुमति देती है, जिससे यह विकेंद्रीकृत ऊर्जा भंडारण के रूप में कार्य करता है।
- यह निम्नलिखित दोनों को सक्षम बनाता है:
    - **G2V (ग्रिड से वाहन):** ग्रिड से EVs को चार्ज करना।
    - **V2G (वाहन से ग्रिड):** EVs से ग्रिड में ऊर्जा का निर्वहन।
- यह नवीकरणीय ऊर्जा के एकीकरण, माँग प्रतिक्रिया, और ग्रिड स्थिरता का समर्थन करता है।
- स्मार्ट चार्जिंग और टाइम ऑफ यूज़ (ToU) टैरिफ इसको प्रबंधित करने के मुख्य उपकरण हैं।

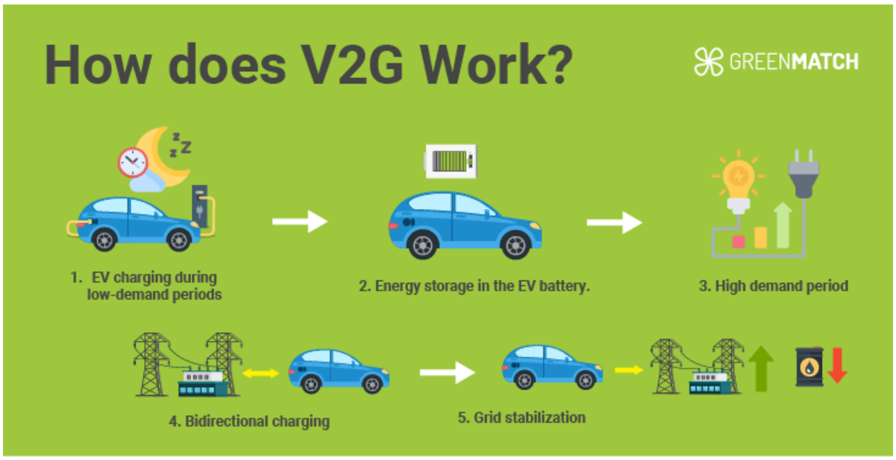

लाभ

- यह उच्च माँग को प्रबंधित कर सकता है और ग्रिड ओवरलोड से बचा सकता है।
- यह दिन के दौरान अतिरिक्त सौर ऊर्जा को संग्रहीत कर सकता है और रात में इसका उपयोग कर सकता है।
- यह परिवर्तनीय नवीकरणीय ऊर्जा को मॉड्यूलेट करके ग्रिड स्थिरता में सुधार करता है।
- उपयोगिताएँ स्मार्ट चार्जिंग, अच्छी तरह से डिज़ाइन किए गए टैरिफ, और वित्तीय प्रोत्साहनों का उपयोग करके V2G को अपनाने को प्रोत्साहित कर सकती हैं और परिवहन को वास्तव में डीकार्बोनाइज कर सकती हैं।

चुनौतियाँ

- वाहन-से-ग्रिड (V2G) सेवाओं का कार्यान्वयन जटिल और क्षेत्र-विशिष्ट नियामक परिदृश्यों का सामना करता है।
- प्रभावी V2G एकीकरण के लिए प्रमुख चुनौतियों में तकनीकी कठिनाइयाँ, डेटा सुरक्षा, और खंडित नियम सम्मिलित हैं।
- एक प्रमुख तकनीकी समस्या EVs की विविध चार्जिंग व्यवहारों के कारण ग्रिड सेवाओं के लिए अप्रत्याशित और अनियमित उपलब्धता है।

वैश्विक अनुप्रयोग

- V2G पहले से ही यूरोप, अमेरिका, और यू.के. में सक्रिय है, जहाँ EV मालिकों को उच्च माँग के दौरान ऊर्जा वापस करने के लिए मुआवजा दिया जाता है।
- कैलिफोर्निया में, यह संकट के दौरान ग्रिड स्थिरता और आपातकालीन विद्युत का समर्थन करता है।

निष्कर्ष और आगे का रास्ता

- V2G प्रौद्योगिकी में पीक पावर सपोर्ट और स्पिनिंग रिजर्व जैसी ग्रिड सेवाएँ प्रदान करने की क्षमता है, जबकि नवीकरणीय ऊर्जा भंडारण के रूप में भी कार्य कर सकती है।
- EV चार्जिंग के डेटा-चालित अनुकूलन से बढ़ते EV उपयोग और वितरित ऊर्जा संसाधनों के बीच ग्रिड की विश्वसनीयता में सुधार हो सकता है।

Source :TH

चीन के साथ भारत का व्यापार घाटा बढ़ा

संदर्भ

- भारत का चीन के साथ व्यापार घाटा 2024-25 वित्तीय वर्ष में रिकॉर्ड $99.2 बिलियन तक बढ़ गया।

परिचय

- व्यापार घाटा इलेक्ट्रॉनिक्स, बैटरी और सोलर कंपोनेंट्स के आयात में वृद्धि के कारण है, जबकि निर्यात में तीव्र गिरावट आई है।
- 2024-25 में चीन $127.7 बिलियन के कुल द्विपक्षीय व्यापार के साथ भारत का दूसरा सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार बना रहा, अमेरिका के पीछे।
- वित्तीय वर्ष के अंत में चीन से कुल आयात $113.5 बिलियन तक पहुँच गया। इसके विपरीत, भारत का निर्यात $14.3 बिलियन तक गिर गया।

भारत का चीन के साथ व्यापार घाटे के कारण

- **मध्यवर्ती वस्त्र और कच्चे माल:**
    - भारत इलेक्ट्रॉनिक्स, फार्मास्यूटिकल्स (APIs), केमिकल्स, और टेक्सटाइल जैसे क्षेत्रों में चीन से बड़ी मात्रा में घटक और कच्चे माल का आयात करता है।
- **उपभोक्ता इलेक्ट्रॉनिक्स और मशीनरी:**
    - चीन मोबाइल फोन, इलेक्ट्रिकल मशीनरी, और टेलीकॉम उपकरण का भारत में प्रमुख निर्यातक है।
- **सिमित निर्यात वस्तुएँ:**
    - भारत का चीन को निर्यात मुख्यतः लौह अयस्क, कपास, और तांबा जैसे कच्चे माल तक सीमित है, जो मूल्य संवर्धन में कम हैं।

- **बाजार पहुँच की बाधाएँ:**
  - भारतीय फर्मों को चीन के घरेलू बाजार में नियामक अड़चनें, गुणवत्ता मानदंड, और भारतीय वस्तुओं की माँग की कमी का सामना करना पड़ता है।
- **लागत और पैमाने के लाभ:**
  - चीन का स्थापित विनिर्माण बुनियादी ढाँचा इसे सस्ते और कुशलतापूर्वक सामान उत्पादन करने की अनुमति देता है।
- **वैश्विक आपूर्ति शृंखला एकीकरण:**
  - चीनी फर्म वैश्विक मूल्य शृंखला ओं में गहराई से शामिल हैं, प्रतिस्पर्धी कीमतों पर अधिक विविधता वाले सामान प्रदान करते हैं।
- **भारत की 'मेक इन इंडिया' पहल:**
  - यह अभी भी विकसित हो रही है, और स्थानीय विनिर्माण इलेक्ट्रॉनिक्स और औद्योगिक मशीनरी में चीनी आयात को प्रतिस्थापित करने के लिए पर्याप्त प्रतिस्पर्धात्मक नहीं है।

चिंताएँ

- **भविष्य की दृष्टि:**
  - वर्तमान वित्तीय वर्ष में चीनी आयात में 20% तक वृद्धि हो सकती है क्योंकि चीनी निर्यातक अमेरिका से सामानों को पुन: मार्ग देने की कोशिश कर रहे हैं।
- **भारतीय निर्माताओं पर प्रभाव:**
  - चीन से सस्ते आयात भारतीय निर्माताओं, विशेष रूप से MSMEs (सूक्ष्म, छोटे और मध्यम उद्यमों) पर हानिकारक प्रभाव डालते हैं, जिससे प्रतिस्पर्धात्मकता में कमी, नौकरी की हानि, और धीमी औद्योगिक वृद्धि होती है।
- **साइबर सुरक्षा और डेटा सुरक्षा:**
  - चीन से टेलीकॉम उपकरण, निगरानी गियर, और इलेक्ट्रॉनिक्स का भारी आयात साइबर सुरक्षा और डेटा सुरक्षा चिंताओं को बढ़ाता है।
- **वित्तीय प्रभाव:**
  - बड़ा व्यापार घाटा व्यापक चालू खाता घाटा (CAD) में योगदान देता है, जिससे रुपये और विदेशी मुद्रा भंडार पर दबाव पड़ता है।
- **राजनयिक तनाव:**
  - सीमा तनाव और तनावपूर्ण राजनयिक संबंध बड़े व्यापार निर्भरता को विरोधाभासी और जोखिमपूर्ण बनाते हैं, जिससे आयात को कम करने के लिए सार्वजनिक और राजनीतिक दबाव बढ़ता है।
- **तकनीकी निर्भरता:**
  - चीनी तकनीकी वस्त्रों पर निर्भरता भारत की उच्च तकनीकी नवाचार और विनिर्माण में पिछड़ापन को दर्शाती है, जिसका व्यापक आर्थिक एवं रणनीतिक स्वायत्तता पर प्रभाव पड़ता है।

सरकारी पहल

- **निदेशालय सामान्य व्यापार उपाय (DGTR):**
  - विदेशी कंपनियों द्वारा अनुचित व्यापार प्रथाओं की सक्रिय रूप से निगरानी करता है और सुधारात्मक उपायों की सिफारिश करता है।
- **वोकल फॉर लोकल अभियान:**
  - उपभोक्ताओं और व्यवसायों के बीच भारतीय निर्मित उत्पाद खरीदने के लिए जागरूकता बढ़ाकर आयातित वस्तुओं की माँग को कम करने का प्रयास।
- **उत्पादन से जुड़ी प्रोत्साहन (PLI) योजनाएँ:**
  - 14 प्रमुख क्षेत्रों के लिए कार्यान्वयन के अंतर्गत हैं ताकि भारत की विनिर्माण क्षमताओं और निर्यात को बढ़ावा मिले।
- **निर्यात प्रचार योजनाएँ:**
  - व्यापार अवसंरचना निर्यात योजना (TIES) और बाजार पहुँच पहल (MAI) योजना जैसे कई योजनाओं के माध्यम से सहायता प्रदान की जाती है।

NEXT IAS

- **कृषि और प्रसंस्कृत खाद्य उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण (APEDA):**
    - कृषि उत्पादों के निर्यात की सुविधा के लिए वित्तीय सहायता के लिए एक केंद्रीय क्षेत्र विशिष्ट योजना है।
- **समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण (MPEDA):**
    - मूल्य संवर्धन के लिए बुनियादी ढाँचे की सुविधाओं को उन्नत करने, परीक्षण प्रयोगशालाएँ स्थापित करने, अंतरराष्ट्रीय व्यापार मेलों में भाग लेने, और निर्यात के लिए जलीय उत्पादन के लिए तकनीकी सहायता प्रदान करने के लिए सहायता प्रदान करता है।
- **जिला को निर्यात केंद्र के रूप में पहल:**
    - प्रत्येक जिले में निर्यात की संभावनाओं वाले उत्पादों की पहचान करके, इन उत्पादों के निर्यात के लिए बाधाओं को हल करके, और स्थानीय निर्यातकों/निर्माताओं का समर्थन करके शुरू की गई।

निष्कर्ष

- इस निर्भरता ने लागत प्रभावी विनिर्माण और उपभोक्ता वहनीयता की सुविधा प्रदान की है, लेकिन यह भारत को इसकी आपूर्ति शृंखला और व्यापार संतुलन में कमजोरियों के प्रति भी उजागर करता है।
- आर्थिक स्थायित्व और रणनीतिक स्वायत्तता सुनिश्चित करने के लिए, भारत को अपने आयात स्रोतों को विविधतापूर्ण बनाने, 'मेक इन इंडिया' और PLI (उत्पादन से जुड़ी प्रोत्साहन) जैसी पहलों के माध्यम से घरेलू विनिर्माण में निवेश करने, और तकनीकी क्षमताओं को बढ़ाने की दिशा में कार्य करना चाहिए।
- निर्भरता कम करने का मतलब अलगाव नहीं है बल्कि एक अधिक संतुलित और सुरक्षित आर्थिक ढाँचे का निर्माण करना है।

Source: IE

भारत की वैश्विक फार्मास्युटिकल उपस्थिति

संदर्भ

- भारत को उचित मूल्य पर गुणवत्तापूर्ण दवाइयों का विश्व में सबसे बड़ा प्रदाता बनाने के दृष्टिकोण के साथ औषधि विभाग ने देश की वैश्विक औषधि छवि को बदल दिया है।

भारत का फार्मास्युटिकल क्षेत्र

- वित्त वर्ष 2023-24 के लिए भारत का फार्मास्युटिकल बाजार 50 बिलियन अमेरिकी डॉलर का है, जिसमें घरेलू खपत 23.5 बिलियन अमेरिकी डॉलर और निर्यात 26.5 बिलियन अमेरिकी डॉलर का है।
- उद्योग के प्रमुख क्षेत्रों में जेनेरिक दवाएँ, ओटीसी दवाएँ, थोक दवाएँ, टीके, अनुबंध अनुसंधान और विनिर्माण, बायोसिमिलर और बायोलॉजिक्स शामिल हैं।
- फार्मा क्षेत्र वर्तमान में देश के सकल घरेलू उत्पाद में लगभग 1.72% का योगदान देता है।
- भारत API का तीसरा सबसे बड़ा उत्पादक है, जिसकी वैश्विक API उद्योग में 8% हिस्सेदारी है।

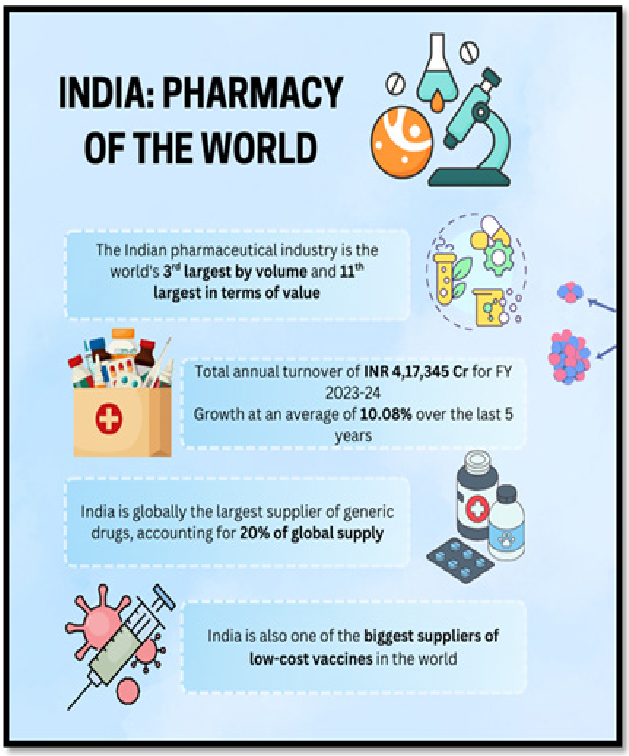

भारत के फार्मास्युटिकल क्षेत्र की उपलब्धियाँ

- भारत विगत छह-सात वर्षों से यूनिसेफ का सबसे बड़ा वैक्सीन आपूर्तिकर्ता रहा है, जो कुल खरीद मात्रा में 55% से 60% का योगदान देता है।
- भारत डीपीटी, बीसीजी और खसरे के टीकों के लिए विश्व स्वास्थ्य संगठन की माँग का क्रमशः 99%, 52% और 45% योगदान दे रहा है।
- 2000-2024 की अवधि के दौरान औषधि एवं फार्मास्यूटिकल्स उद्योग में संचयी एफडीआई इक्विटी प्रवाह 22.52 बिलियन अमेरिकी डॉलर है।
- यह देश वैश्विक स्तर पर जेनेरिक दवाओं का सबसे बड़ा प्रदाता है, वैश्विक आपूर्ति में इसकी हिस्सेदारी 20% है, तथा यह विश्व स्तर पर अग्रणी वैक्सीन निर्माता है।
    - भारत को अपनी दवाओं की कम लागत और उच्च गुणवत्ता के कारण "विश्व की फार्मेसी" के रूप में जाना जाता है।

चिकित्सा उपकरण क्षेत्र

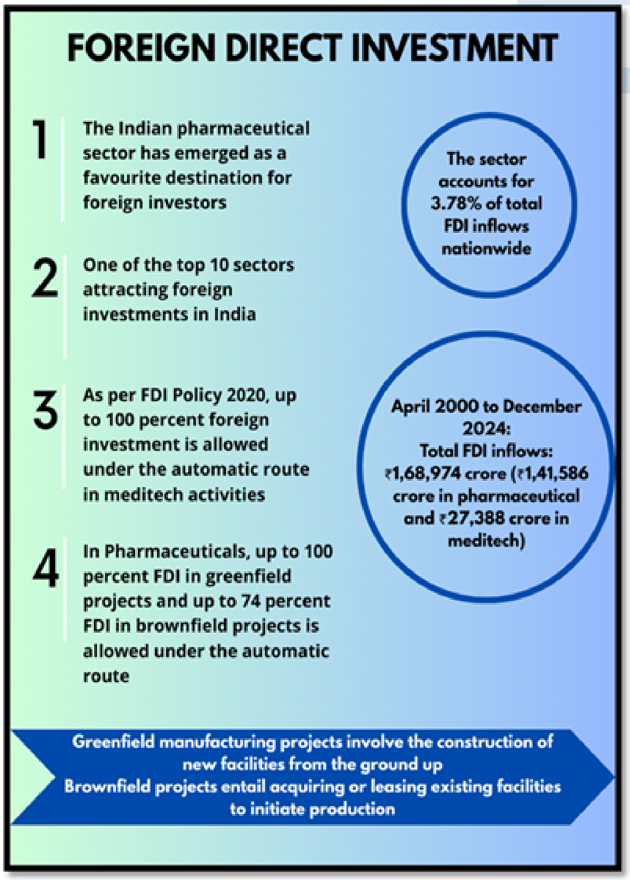

- चिकित्सा उपकरण क्षेत्र भारतीय स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र का एक आवश्यक और अभिन्न अंग है, विशेष रूप से सभी चिकित्सा स्थितियों और विकलांगताओं की रोकथाम, निदान, उपचार एवं प्रबंधन के लिए।
- इसकी घटक उपकरण श्रेणियाँ हैं; इलेक्ट्रो-मेडिकल उपकरण, प्रत्यारोपण, उपभोग्य और डिस्पोजेबल, सर्जिकल उपकरण तथा इन विट्रो डायग्नोस्टिक अभिकर्मक।
- वित्तीय वर्ष 2024-25 में, अप्रैल 2024 से दिसंबर 2024 तक, एफडीआई प्रवाह (फार्मास्युटिकल्स और चिकित्सा उपकरणों दोनों में) ₹11,888 करोड़ था।

सरकारी पहल

- 2020 में शुरू की गई उत्पादन-लिंक्ड प्रोत्साहन योजना एक परिवर्तनकारी पहल है जिसका उद्देश्य घरेलू विनिर्माण को बढ़ावा देना, निवेश आकर्षित करना, आयात पर निर्भरता कम करना और निर्यात बढ़ाना है। इसमें शामिल है;
    - फार्मास्यूटिकल्स के लिए PLI योजना,
    - महत्त्वपूर्ण KSMs/DIs/APIs के घरेलू विनिर्माण को बढ़ावा देने के लिए PLI योजना,
    - चिकित्सा उपकरणों के घरेलू विनिर्माण को बढ़ावा देने के लिए PLI योजना।
- **बल्क ड्रग पार्कों को बढ़ावा:** मार्च 2020 में स्वीकृत इस योजना (वित्त वर्ष 2020-21 से वित्त वर्ष 2025-26) का उद्देश्य विनिर्माण लागत को कम करने और बल्क ड्रग्स में आत्मनिर्भरता बढ़ाने के लिए विश्व स्तरीय सामान्य बुनियादी ढाँचे वाले पार्क स्थापित करना है।
- **प्रधानमंत्री भारतीय जन औषधि परियोजना (PMBJP):** गुणवत्तापूर्ण जेनेरिक दवाइयाँ समर्पित दुकानों के माध्यम से सभी को सस्ती कीमतों पर उपलब्ध कराई जाती हैं।

निष्कर्ष

- भारत का फार्मास्यूटिकल एवं चिकित्सा उपकरण क्षेत्र विज्ञान, नवाचार और विनिर्माण में देश की बढ़ती क्षमताओं का प्रमाण है।
- इसमें इस बात पर बल दिया गया है कि देश का फार्मास्युटिकल क्षेत्र 2030 तक 130 बिलियन अमेरिकी डॉलर का आँकड़ा छू लेगा।

Sources: PIB

मध्यम द्रव्यमान वाले ब्लैक होल (IMBH)

समाचार में

- भारतीय खगोलविदों ने धुंधली आकाशगंगा एनजीसी 4395 में एक दुर्लभ मध्यम द्रव्यमान वाले ब्लैक होल (IMBH) का पता लगाने और मापने के लिए देवस्थल ऑप्टिकल टेलीस्कोप (DOT) का उपयोग किया।

NGC 4395

- यह एक बौनी सर्पिल आकाशगंगा है जो पृथ्वी से लगभग 14 मिलियन प्रकाश वर्ष दूर स्थित है।
- इसकी सतह की चमक कम है और यह सबसे निकटतम और मंद ज्ञात सेफ़र्ट आकाशगंगाओं में से एक है।
    - सेफ़र्ट आकाशगंगाओं में सक्रिय गैलेक्टिक नाभिक (AGN) होते हैं, जो अतिविशाल ब्लैक होल्स द्वारा संचालित होते हैं, जो विद्युतचुंबकीय स्पेक्ट्रम में विकिरण उत्सर्जित करते हैं।
    - इसका केन्द्रीय ब्लैक होल सूर्य के द्रव्यमान से लगभग 10,000 गुना बड़ा है।

मध्यम द्रव्यमान वाले ब्लैक होल क्या हैं?

- वे तारकीय द्रव्यमान और अतिविशाल ब्लैक होल के बीच की गुम कड़ियाँ खोज रहे हैं।
- ऐसा माना जाता है कि ये अतिविशाल ब्लैक होल्स के विकास के लिए बीज हैं।
- आईएमबीएच को "बीज" माना जाता है जो अंततः अतिविशाल ब्लैक होल में विकसित हो सकते हैं, जिससे यह समझने में मदद मिलती है कि प्रारंभिक ब्रह्मांड में ऐसे विशालकाय ब्लैक होल कैसे बने।

आईएमबीएच का पता लगाना कठिन क्यों है?

- उनके मंद उत्सर्जन और छोटी आकाशगंगाओं में स्थित होने के कारण उनका अवलोकन करना कठिन है।
- इससे पारंपरिक पहचान तकनीकें अप्रभावी हो जाती हैं, तथा इनके लिए उन्नत उपकरणों और विधियों की आवश्यकता होती है।

खोज के बारे में

- यह कम चमक वाली सक्रिय आकाशगंगाओं में आकार-चमक संबंध का समर्थन करने वाले मजबूत साक्ष्य प्रदान करता है तथा आईएमबीएच के सबसे सटीक द्रव्यमान अनुमानों में से एक प्रस्तुत करता है।
- ब्लैक होल अपनी सैद्धांतिक अधिकतम दर के केवल 6% पर ही पदार्थ एकत्रित कर रहा है।
- ये निष्कर्ष ब्लैक होल की वृद्धि और विकास को समझने में एक महत्त्वपूर्ण कदम है, तथा भविष्य में और अधिक उन्नत अवलोकन की योजना बनाई जाएगी।

क्या आप जानते हैं?

- यह कम चमक वाली सक्रिय आकाशगंगाओं में आकार-चमक संबंध का समर्थन करने वाले मजबूत साक्ष्य प्रदान करता है तथा आईएमबीएच के सबसे सटीक द्रव्यमान अनुमानों में से एक प्रस्तुत करता है।
- ब्लैक होल अपनी सैद्धांतिक अधिकतम दर के केवल 6% पर ही पदार्थ एकत्रित कर रहा है।
- ये निष्कर्ष ब्लैक होल की वृद्धि और विकास को समझने में एक महत्त्वपूर्ण कदम है, तथा भविष्य में और अधिक उन्नत अवलोकन की योजना बनाई जाएगी।

ब्लैक होल के बारे में

- ब्लैक होल अंतरिक्ष में एक ऐसा क्षेत्र है जहाँ गुरुत्वाकर्षण बल इतना प्रबल होता है कि कुछ भी - यहाँ तक कि प्रकाश भी - वहाँ से बचकर नहीं जा सकता। यह अत्यधिक गुरुत्वाकर्षण पदार्थ के अत्यंत छोटे क्षेत्र में संपीड़ित होने के कारण उत्पन्न होता है।
- ब्लैक होल की अवधारणा को अल्बर्ट आइंस्टीन ने 1915 में अपने सामान्य सापेक्षता सिद्धांत के माध्यम से प्रतिपादित किया था।
- "ब्लैक होल" शब्द का आविष्कार 1960 के दशक में जॉन आर्चीबाल्ड व्हीलर द्वारा किया गया था।
- ब्लैक होल आमतौर पर तब बनते हैं जब किसी विशाल तारे का ईंधन समाप्त हो जाता है और सुपरनोवा विस्फोट होता है - ऊर्जा का एक विशाल विस्फोट, जो तारे के जीवन के अंत का संकेत देता है। पीछे छूटा घना कोर ब्लैक होल में तब्दील हो सकता है।

ब्लैक होल के प्रकार

- **तारकीय ब्लैक होल:**
  - **द्रव्यमान:** कुछ से लेकर दस सौर द्रव्यमान तक।
  - **उत्पत्ति:** सुपरनोवा के बाद विशाल तारों के विघटन से इसका निर्माण हुआ।
- **अतिविशाल ब्लैक होल:**
  - **द्रव्यमान:** सूर्य के द्रव्यमान का लाखों से लेकर अरबों गुना तक।
  - **उत्पत्ति:** ऐसा माना जाता है कि इसका निर्माण छोटे ब्लैक होल्स के विलय और समय के साथ द्रव्यमान के संचय से हुआ है।
    - यह हमारी अपनी आकाशगंगा सहित अधिकांश आकाशगंगाओं के केन्द्र में पाया जाता है।

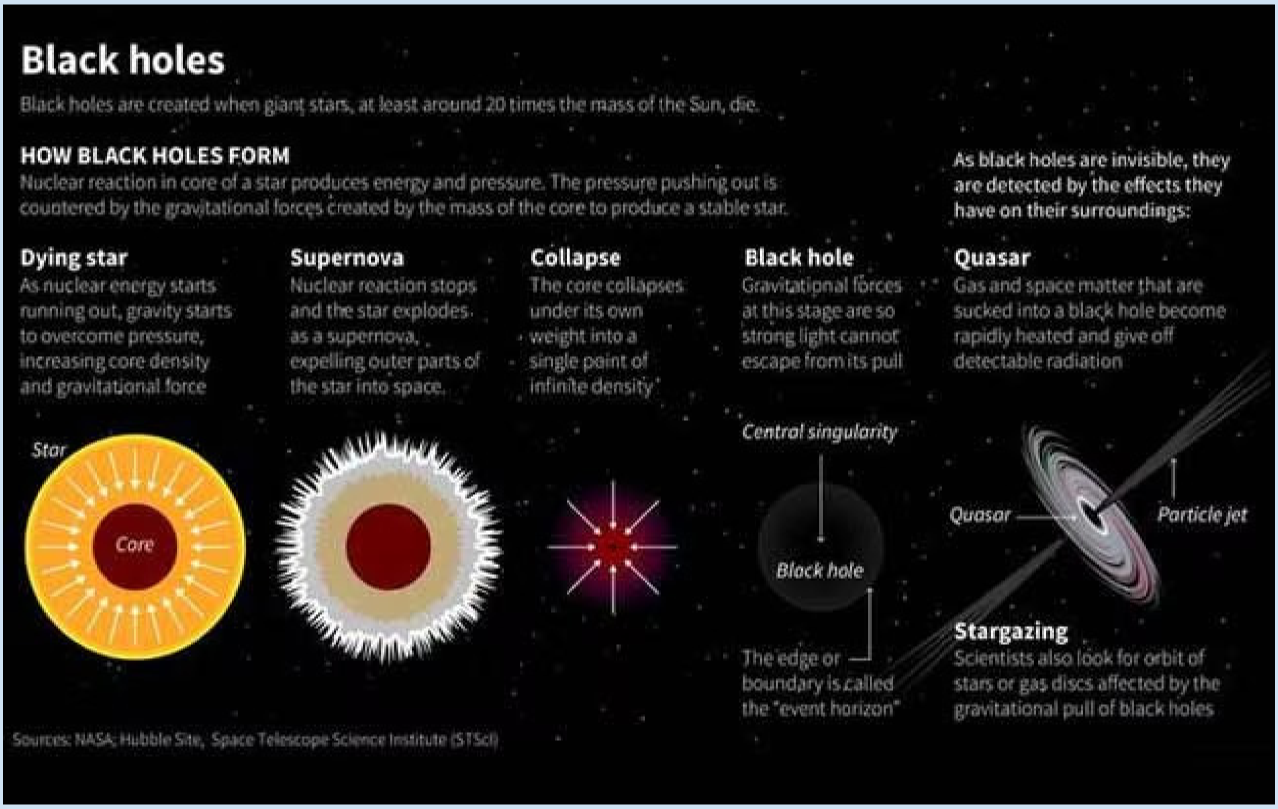

Source: TH

संक्षिप्त समाचार

गुरु तेग बहादुर

समाचार में

- प्रधानमंत्री ने प्रकाश पर्व के शुभ अवसर पर श्री गुरु तेग बहादुर को श्रद्धांजलि अर्पित की।

श्री गुरु तेग बहादुर

- उनका जन्म 1 अप्रैल 1621 को अमृतसर में हुआ था और वे नौवें सिख गुरु और गुरु हरगोबिंद साहिब के सबसे छोटे पुत्र थे।

  - उनका मूल नाम त्याग मल था, युद्ध में बहादुरी दिखाने के बाद उन्हें तेग बहादुर की उपाधि मिली।
- उन्होंने माता गुजरी से शादी की और उनके एक पुत्र, गुरु गोबिंद सिंह थे।
- उन्होंने ध्यान, निःस्वार्थ सेवा और त्याग का जीवन जिया।
- उन्होंने व्यापक रूप से यात्रा की, सिख धर्म का प्रचार किया, सामाजिक सुधार को बढ़ावा दिया और नए प्रचार केंद्र स्थापित किये।

बलिदान

- 1675 में, उन्होंने इस्लाम में परिवर्तन करने से इनकार करने और विशेष रूप से उत्पीड़ित कश्मीरी पंडितों के लिए धार्मिक स्वतंत्रता की रक्षा के लिए मुगल सम्राट औरंगजेब द्वारा दिल्ली में शहादत प्राप्त की।
  - उनके बलिदान ने उन्हें "हिंद की चादर" (भारत की ढाल) की उपाधि दी।

विरासत

- एक महान कवि और दार्शनिक, उनके गुरू ग्रंथ साहिब में लिखे गए भजनों में साहस, करुणा, और भक्ति पर बल दिया गया है।
- उनकी शहादत ने खालसा की स्थापना की नींव रखी और उत्पीड़न के विरुद्ध लड़ने के लिए पीढ़ियों को प्रेरित किया।

Source :PIB

भगवद् गीता और नाट्यशास्त्र को यूनेस्को के विश्व स्मृति रजिस्टर में शामिल किया गया

समाचार में

- भगवद् गीता और भरत मुनि के नाट्यशास्त्र की पांडुलिपियों को यूनेस्को के विश्व स्मृति रजिस्टर में अंकित किया गया है।

यूनेस्को का विश्व स्मृति रजिस्टर क्या है?

स्थापना: 1992 में UNESCO द्वारा।

उद्देश्य: दुर्लभ पांडुलिपियों, अभिलेखीय संग्रहों, और सार्वभौमिक मूल्य की अन्य दस्तावेजी विरासत को उपेक्षा, क्षय, और विनाश से बचाने के लिए।

समावेश के मानदंड:

- उत्कृष्ट सार्वभौमिक मूल्य।
- ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, या सामाजिक महत्त्व।
- प्रामाणिकता, अखंडता, और दुर्लभता।

2025 तक, इस रजिस्टर में 72 देशों और 4 अंतर्राष्ट्रीय संगठनों से 570 संग्रह सम्मिलित हैं।

अभिलेखों के बारे में भगवद गीता:

- **अर्थ:** "प्रभु के गीत।"
- **लेखक:** ऋषि व्यास।
- **विषयवस्तु:** महाभारत से भगवान कृष्ण और अर्जुन के बीच 700-श्लोक संवाद।

- **थीम:** धर्म (कर्तव्य), कर्म (कार्य), भक्ति (समर्पण), ज्ञान (ज्ञान)।
- **महत्त्व:** भारतीय दर्शन, नैतिकता, और आध्यात्मिकता का केंद्र; गांधी, आइंस्टीन, और एल्डस हक्सले जैसे विचारकों पर वैश्विक प्रभाव।

नाट्यशास्त्र:

- **लेखक:** भरत मुनि।
- **तिथि:** लगभग 200 ईसा पूर्व – 200 ईस्वी।
- **विषयवस्तु:** नाटक, नृत्य, संगीत, और प्रदर्शन पर संस्कृत में बुनियादी ग्रंथ।
- **मुख्य अवधारणाएँ:**
  - रस सिद्धांत: सौंदर्य अनुभव (जैसे, शृंगार, करुणा, वीर, आदि)।
  - मंच डिजाइन, अभिनय, मुद्राएँ (मुद्राएँ), परिधानों, और संगीत उपकरणों का विस्तृत विश्लेषण।
- **प्रभाव:** शास्त्रीय भारतीय नृत्य रूपों (भरतनाट्यम, कथक, आदि) और पारंपरिक थिएटर के लिए आधार।

भारत का मेमोरी ऑफ द वर्ल्ड में समावेश

- भारत के पास अब इस प्रतिष्ठित रजिस्टर में 14 प्रविष्टियाँ हैं।
- 2024 MOWCAP (मेमोरी ऑफ द वर्ल्ड समिति एशिया और प्रशांत के लिए) क्षेत्रीय रजिस्टर में हालिया अतिरिक्त में शामिल हैं:
  - रामचरितमानस
  - पंचतंत्र
  - सहरदयालोक-लोचना

Source: TH

K2-18b की खोज, बाह्यग्रह पर बायोसिग्नेचर

सन्दर्भ

- 120 प्रकाश वर्ष दूर स्थित ग्रह K2-18b के डेटा का अध्ययन कर रहे शोधकर्ताओं ने डाइमिथाइल सल्फाइड (DMS) और डाइमिथाइल डाइसुल्फाइड (DMDS) के मजबूत संकेतों की सूचना दी है।

परिचय

- डाइमिथाइल सल्फाइड (DMS) और डाइमिथाइल डाइसुल्फाइड (DMDS) को पहली बार हमारे सौर मंडल के बाहर पाया गया है।
- **जैविक प्रक्रियाओं से संबद्ध:**
  - ये गैसें पृथ्वी पर छोटे महासागरीय जीवों से संबंधित जैविक प्रक्रियाओं से जुड़ी हैं।
  - पृथ्वी पर, ये महासागरों में छोटे पौधों जैसे जीवों की चयापचय प्रक्रियाओं और क्षय का परिणाम हैं।
- वैज्ञानिकों ने K2-18b पर गर्म महासागर की संभावना पर अनुमान लगाया है, जो उस वातावरण के समान है जिसने लगभग 3.5 से 4 अरब वर्ष पहले पृथ्वी पर जीवन को जन्म दिया।

खोज का महत्त्व

- **DMS एक बायोमार्कर:** इसका तात्पर्य है कि यह जीवन की उपस्थिति का संकेत दे सकता है।
  - इस खोज ने परग्रही जीवन में नई रुचि को जन्म दिया है।
  - हालांकि, शोधकर्ता जोर देते हैं कि यह जीवन का निश्चित प्रमाण नहीं है।

K2-18b के बारे में

- **खोज:** 2015 में, K2-18b को सुपर अर्थ एक्सोप्लैनेट के रूप में खोजा गया।
- **मूल्य:** यह पृथ्वी के द्रव्यमान से 8.6 गुना अधिक है।
- **परिक्रमा क्षेत्र:** यह "रहने योग्य क्षेत्र" में परिक्रमा करता है - ऐसी दूरी जहाँ तरल जल, जीवन के लिए एक प्रमुख घटक, ग्रह की सतह पर उपस्थित हो सकता है।
- **तारा:** यह सूर्य से छोटे लाल बौने तारे के चारों ओर परिक्रमा करता है।

हाइसियन वर्ल्ड्स

- 1990 के दशक से अब तक हमारे सौर मंडल से परे लगभग 5,800 ग्रह, जिन्हें एक्सोप्लैनेट कहा जाता है, खोजे गए हैं।
- वैज्ञानिकों ने हाइसियन वर्ल्ड्स नामक एक्सोप्लैनेट की उपस्थिति पर अनुमान लगाया है - जो तरल पानी के महासागर से ढके हुए हैं, जो सूक्ष्मजीवों के लिए रहने योग्य हैं और हाइड्रोजन-समृद्ध वातावरण रखते हैं।

Source: IE

भारत और इंटरनेशनल बिग कैट अलायंस ने समझौते पर हस्ताक्षर किए

प्रसंग भारत सरकार और अंतर्राष्ट्रीय बिग कैट एलायंस (IBCA) ने मुख्यालय समझौते पर हस्ताक्षर किए।

इसके बारे में

- समझौता भारत को IBCA मुख्यालय और सचिवालय के लिए मेजबान बनने का प्रावधान करता है; और इसमें IBCA को अपने लक्षित उद्देश्यों को पूरा करने में सक्षम बनाने के लिए आवश्यक प्रावधान सम्मिलित हैं।
- भारत सरकार 2023-24 से 2028-29 तक पाँच वर्षों के लिए ₹150 करोड़ का बजट समर्थन प्रदान करेगी, जिसमें कोष बनाना, बुनियादी ढाँचे का निर्माण, और आवर्ती खर्चों को पूरा करना शामिल है।

अंतर्राष्ट्रीय बिग कैट एलायंस (IBCA)

- यह 2023 में, मैसूरु में "प्रोजेक्ट टाइगर की 50वीं वर्षगांठ" मनाने वाले एक कार्यक्रम के दौरान प्रधानमंत्री द्वारा शुरू किया गया था।
- IBCA कानूनी इकाई बन गई जब पांच देशों—निकारागुआ, इस्वातिनी, भारत, सोमालिया और लाइबेरिया—ने फ्रेमवर्क समझौते पर हस्ताक्षर करके IBCA के सदस्य बनने की औपचारिकता पूरी की।
- 27 देशों ने IBCA में शामिल होने पर सहमति व्यक्त की है।
- IBCA का मुख्य उद्देश्य सात बिग कैट, अर्थात् बाघ, सिंह, तेंदुआ, हिम तेंदुआ, चीता, जगुआर और प्यूमा के संरक्षण का है।

उद्देश्य:

- संबंधित हितधारकों के बीच सहयोग और तालमेल की सुविधा प्रदान करना।
- सफल संरक्षण प्रथाओं और विशेषज्ञता को समेकित करना।
- विश्व भर में बिग कैट के संरक्षण को प्राप्त करना।
- इस पहल का उद्देश्य बिग कैट के स्थायी भविष्य के लिए अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा देना है, साथ ही भारत के नेतृत्व और वैश्विक वन्यजीव संरक्षण के प्रति प्रतिबद्धता को रेखांकित करना है।

Source: MEA

मिशन अमृत सरोवर

समाचार में

- मिशन अमृत सरोवर ग्रामीण आजीविका को बढ़ाते हुए पूरे हुए सरोवरों के आसपास सिंचाई, मत्स्य पालन, बतख पालन, जल सिंहाड़ा की खेती और पशुपालन जैसी विभिन्न आय उत्पन्न करने वाली गतिविधियों को सक्षम बना रहा है।

मिशन अमृत सरोवर

- **शुरुआत:** यह 2022 में आजादी का अमृत महोत्सव के अंतर्गत लॉन्च किया गया था।
- **उद्देश्य:**
  - यह जल संरक्षण, स्थिरता और सामुदायिक भागीदारी को बढ़ावा देने के लिए प्रत्येक जिले में 75 जल निकायों का निर्माण और पुनर्जनन करने की प्रमुख पहल है।
  - यह भूजल की कमी और ग्रामीण जल संकट जैसी महत्त्वपूर्ण समस्याओं को पारंपरिक प्रथाओं और आधुनिक दृष्टिकोणों के संयोजन से संबोधित करता है।

- इसे महात्मा गांधी NREGS, 15वें वित्त आयोग अनुदान, पीएम कृषि सिंचाई योजना उप-योजनाएँ, और राज्य-स्तरीय कार्यक्रमों जैसी मौजूदा योजनाओं के साथ समvergence के माध्यम से लागू किया गया है।
- यह क्राउडफंडिंग और कॉर्पोरेट सामाजिक जिम्मेदारी (CSR) के माध्यम से सार्वजनिक योगदान की भी अनुमति देता है।

प्रगति

- मूल रूप से 15 अगस्त 2023 तक 50,000 सरोवरों का लक्ष्य रखा गया था, यह मिशन ग्रामीण विकास, पारिस्थितिक पुनर्स्थापन, और बुनियादी स्तर की शासन प्रणाली को एकीकृत करते हुए एक राष्ट्रव्यापी आंदोलन में बदल गया है।
- मार्च 2025 तक, 68,000 से अधिक सरोवर पूरे हो चुके हैं, जिससे जल उपलब्धता में उल्लेखनीय सुधार हुआ है।
- विशेषतः, महात्मा गांधी NREGS के तहत 46,000 से अधिक सरोवर विकसित किए गए हैं, जो वर्तमान योजनाओं और सार्वजनिक जुड़ाव के साथ मजबूत अभिसरण को दर्शाते हैं।

Source :PIB

सिल्कयारा सुरंग

संदर्भ

- उत्तराखंड में सिल्क्यारा सुरंग का नाम बाबा बौखनाग के नाम पर रखा जाएगा।

परिचय

- सिल्क्यारा सुरंग एक द्वि-दिशात्मक, दोहरी लेन वाली सुरंग है जिसकी कुल लंबाई 4,531 किलोमीटर है।
- यह उत्तराखंड के उत्तरकाशी जिले में यमुनोत्री राष्ट्रीय राजमार्ग पर स्थित है।
- इस सुरंग का निर्माण 1,384 करोड़ रुपये की अनुमानित लागत से किया जा रहा है और यह चार धाम ऑल वेदर रोड परियोजना का एक प्रमुख घटक है।
- एक बार चालू हो जाने पर यह सुरंग गंगोत्री और यमुनोत्री के बीच की दूरी लगभग 25 किलोमीटर कम कर देगी।

बाबा बौखनाग

- बाबा बौखनाग एक पूजनीय स्थानीय देवता हैं जिनकी पूजा उत्तराखंड के उत्तरकाशी जिले और उसके आसपास के समुदायों द्वारा की जाती है।
- ऐसा माना जाता है कि वह पहाड़ों की संरक्षक आत्मा है।

Source: IE

टॉरस मिसाइल

प्रसंग

- रूस ने कहा है कि जर्मन टॉरस मिसाइलों का उपयोग करके किसी भी यूक्रेनी हमले को वह जर्मनी की "युद्ध में प्रत्यक्ष भागीदारी" के रूप में देखेगा।

टॉरस मिसाइल क्या है?

- **टॉरस KEPD-350:** यह एक लंबी दूरी की क्रूज मिसाइल है, जिसे जर्मन सैन्य बल, बुंडेसवेयर, द्वारा उपयोग की जाने वाली सबसे आधुनिक हथियार प्रणालियों में से एक माना जाता है।
- **गति और सीमा:**
  - यह 1,170 किलोमीटर प्रति घंटे की गति से यात्रा करने में सक्षम है।
  - यह 500 किलोमीटर की दूरी तक लक्ष्य तक पहुँच सकती है।
- **रडार अवलोकन से बचाव:**
  - यह केवल 35 मीटर की ऊँचाई पर उड़ान भर सकती है, जिससे रडार प्रणालियों द्वारा इसका पता लगाना लगभग असंभव हो जाता है।
- **सुविधाएँ:**
  - इसमें दिन और रात, हर मौसम में काम करने की क्षमता है।

- **MTCR श्रेणी-II हथियार:**
  - यह एक मोबाइल टेक्नोलॉजी कंट्रोल रिजीम (MTCR) श्रेणी-II हथियार है।
  - इसे मोटी, सुदृढ़ वायु रक्षा को बहुत निम्न स्तर की भूमि का अनुसरण करने वाली उड़ान के माध्यम से भेदने के लिए डिज़ाइन किया गया है।
- **नेविगेशन सिस्टम:**
  - यह ट्रैक पर रहने के लिए चार स्वतंत्र नेविगेशन सिस्टम का उपयोग करता है।
  - इसमें सैटेलाइट-सपोर्टेड GPS सिस्टम है, जो इसे जाम करने के प्रयासों के खिलाफ संरक्षित है।

Source: ET

दाऊदी बोहरा समुदाय

संदर्भ

- दाऊदी बोहरा समुदाय के एक प्रतिनिधिमंडल ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से मुलाकात की।

दाऊदी बोहरा समुदाय

- दाऊदी बोहरा मुख्य रूप से पश्चिमी भारत का एक मुस्लिम समुदाय है, जिसके सदस्य विश्व भर के 40 से अधिक देशों में बसे हुए हैं।
- इसकी विरासत मिस्र के पैगम्बर मुहम्मद के प्रत्यक्ष वंशज, फातिमी इमामों से जुड़ी है।
- विश्व भर में दाऊदी बोहराओं का मार्गदर्शन उनके नेता अल-दाई अल-मुतलक (अप्रतिबंधित मिशनरी) द्वारा किया जाता है, जो पहले यमन से और फिर विगत 450 वर्षों से भारत से अपना कार्य संचालित करते थे।

Source: IE

NEXT IAS